पाठ 11. वैद्य जी

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को अपने काम को महत्त्व देने की सीख देना है। इस पाठ द्वारा बच्चे समझ पाएँगे कि अपने काम और व्यवसाय को निष्ठा, ईमानदारी एवं लगन से करना कितना आवश्यक है। ईमानदारी से किया गया प्रत्येक काम सुखद परिणाम ही देता है। इसके साथ ही, इस पाठ द्वारा दूसरों की सेवा-सहायता की सीख भी दी जा रही है।

पाठ का सारांश

अपने काम या व्यवसाय के प्रति समर्पण का भाव रखना किसी भी मनुष्य को विशेष स्थान दिलाता है। एक वैद्य जी के घर चोरी हो जाने पर भी वे अपनी पत्नी को दिलासा दे रहे होते हैं कि उनके घर से सामान ही चोरी हुआ है। उनकी वैद्यक-विद्या तो कोई नहीं चुरा सकता न! तभी कुछ भील उन्हें बुलाने आ जाते हैं। यह जानकर भी कि बीमार लड़के का पिता चोर है, वैद्य जी इलाज करने के लिए चल पड़ते हैं। वहाँ पहुँचने पर उन्हें पता चलता है कि उनके घर का सामान उसी चोर के घर में रखा है। परंतु यह बात भुलाकर, वे बीमार लड़के के इलाज में जुट जाते हैं। वैद्य जी जंगल में परेशानियाँ उठाते हुए जड़ी-बूटी ढूँढ़ते हैं। लड़के की जान बच जाती है। चोर भीमनायक वैद्य जी के पैरों में गिर पड़ता है। वैद्य जी की सूरत में ही भीमनायक को भगवान नज़र आते हैं। वैद्य जी अपने घर लौट आते हैं। भीमनायक वैद्य जी का सारा सामान लौटा देता है और अपने अपराध के लिए उनसे क्षमा याचना करता है।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व **पठन-पूर्व चर्चा** में पूछे गए प्रश्नों पर चर्चा करें। पाठ का आदर्श वाचन करें। पाठ के महत्त्वपूर्ण अंशों तथा पंक्तियों का सरलीकरण करते हुए अर्थ समझाएँ। कहानी का मूल भाव समझाएँ। पाठ में निहित जीवन-मूल्यों, कर्तव्यनिष्ठा, परोपकार, सहानुभूति एवं सहायता को विकसित करें तथा इन मूल्यों का महत्त्व समझाएँ।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- डॉक्टर को भगवान का दूसरा रूप कहा जाता है। क्या आप भी ऐसा ही मानते हो?
- क्या आप भी अपनी पढ़ाई के प्रति इतनी ही निष्ठा और लगन रखते हो, जितनी वैद्य जी अपने काम के प्रति रखते थे?

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।